Kala : The Journal of Indian Art History Congress
ISSN : 0975-7945

विश्व–शान्ति हेतु धर्म – शिक्षण

डॉ सुधीर नारायण सिंह
सह आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, मानविकी एवं प्रबन्ध विज्ञान विभाग, मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ0 प्र0
डॉ पद्मा सिंह
अध्यापिका, बिरला बालिका विद्यापीठ, पिलानी, राजस्थान

शोध पत्र सार :–
विश्व के सभी प्रमुख धर्म अपने अनुयाइयों को एक उच्च स्तरीय, शान्तिप्रिय, विकासोन्मुखी जीवन प्रदान करने हेतु एक अनुकरणीय जीवन शैली का निष्पादन करने हेतु सतत प्रयतन्शील रहे हैं। अगर हम परिभाषगत शब्दावली का अवलोकन करें तो धर्म धृ धातु से उत्पन्न अर्थात जीवनचर्या में व्यवहृत करने योग्य नियमावली मात्र है। मानव मन की चंचलता तथा उसकी स्वच्छन्दता कहीं निरंकुश न हो जाय शायद इसीलिए धरा पर धर्म का उद्भव हुआ। मानवता में अनेकाने धर्मो का अभ्युदय, विकास, उत्कर्ष, उन्नयन तदुपरान्त अपकर्ष, अधोगति, विनाश तथा पतनोन्मुखी हो अतीत के गर्त में समाहीत होते हुए भी देखा है। जब एक धर्म अपने अनुयायियों की जीवन शैली, उनकी जीवन रक्षा तथा विकास करने में असर्मथ हो जाता है। तो वह धर्म उस समुदाय या उसके अनुयायियों हेतु सर्वथा अप्रासंगिक हो जाता है। भूमंडलीकरण के विस्तार में विविध धर्मावलम्बियों का आवागमन निन्यप्रति निर्बाध गति से अनवरत चल रहा है। ऐसे में सभी धर्मानुयायियों के समक्ष यक्ष प्रश्न यह है कि अन्तः तथा अन्तः धर्मो के बीच उपस्थित गतिरोधों को दूर कर विश्वशातिं की स्थापना कैसे की जाय? ऐसे में शैशवावस्था से लेकर किशोरावस्था तक नवयुवकों तथा नवयुवतियों को एक या एक से अधिक धर्मों का ज्ञान प्रदान करना तथा उनके मानस पटल पर व्यवस्थित एवं सामंजस्यपूर्ण जीवन की महत्ता को सृजित करना है।
प्रस्तुत शोध पत्र में विविध भारतीय धर्मों में विहित उत्कृष्ट उद्धरणों के माध्यम से विश्वशांति की स्थापना में धर्मशिक्षण की महत्ता को परिलक्षित करने का लेखक द्वारा लघुप्रयास किया गया है।
मुख्य शब्द– विश्वशांति, धर्मशिक्षण, सामुदायिक साहचर्य, सांस्कृतिक समन्वयन, मानवतापूर्ण, सामंजस्य

1 प्रस्तावना :–

सृजनहार के मानस पटल पर जब सृष्टि संरचरना की परिकल्पना अद्भुत हुई तो सबसे पहले उन्होंने अथाह जलराशि के अन्दर समाहित हुई पृथ्वी को निकाला तथा अपनी उद्भुत कलाकृति नर और नारी का सृजन किया । इन दोनों के मेल मानवी सृष्टि का विस्तार हुआ। धीरे–धीरे यह धरा मानवीय समुदायों से परिपूर्ण हो गई। समय चक्र की अनवरत चाल जब सतयुग त्रेता, द्वापर को पार करती हुई कलियुग के द्वार पर पहुंची तब प्रकृति के आदि स्वरूप और वर्तमान स्वरूप के रूप में बहुत कुछ परिवर्तन हो चुका था। जो शांति सतयुग का मुख्य आधार थी वह त्रेता एवं द्वापर में थोड़ी–थोड़ी विचलित व विखंडित होने लगी, किन्तु आज उसी शांति का स्वरूप अपने वास्तविक स्वरूप से विकृत एवं भिन्न दिखाई दे रहा है। अगर हम प्रारम्भ से ही इस शांति का ध्यान रखते तो आज इस तरह अशांति अपने साम्राज्य को विस्तार न दे रही होती और हम शांति की खेज में प्रयासरत न दिखते, क्योंकि सभी धर्मों का सार तो शांति ही है।

2 विश्व शांति हेतु ईसाई धर्म शिक्षण :–

लगभग दो हजार वर्ष पूर्व इस धारा पर जिस शांति दूत का अवतार हुआ उसे एक शांति के मसीहा के रूप में देखा गया और विश्व प्रसिद्ध इस्वी सन् का शुभारंभ उनके नाम पर किया गया जीसस ने बिना किसी भेदभाव के सहृदयता, सहिष्णुता, प्रेम, भाईचारा तथा शांति का सदेंश देते हुए अपना जीवन–यापन किया। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि सनातन धर्म परम्परा के बाद शायद ईसाई धर्म का ही विश्व के दूसरे ऐसे धर्म के रूप मे प्रादुर्भाव हुआ जिसमें क्षमा, दया एवं करूणा को अपनाने पर सर्वाधिक बल दिया गया। प्रभु यीशु ने तो अपने आपको शूली पर टाँगने वालों के लिए भी यह प्रार्थना की हे विधाता इन्हें क्षमा कर देना क्योंकि ये लोग अपने कर्म से अनभिज्ञ हैं, इन्हें नही मालूम कि ये कौन सा जघन्य कर्म करने जा रहे हैं। क्षमा,दया,करूणा का ऐसा दृष्टांत विश्व के दूसरे धर्मों में दुर्लभ ही

दृष्टिगोचर होता है। अतएव शायद इसीलिए ही यीशू को उनके धर्मानुयायियों ने यीशू दयासागर की संज्ञा से नवाजा। ईसाई धर्म अपनी इन्ही विशेषताओं के कारण आज भी प्रासंगिक है तथा विश्व शांति हेतु महती भूमिका निभा सकने में सक्षम एवं समर्थ है।

3 सिक्ख धर्म में विश्व शांति शिक्षण :–

सिक्ख धर्म की गुरू परम्परा सभी धर्मों के सार तत्व को गुरूज्ञान व गुरूवाणी स्वरूप प्रचारित व प्रसारित करती रही है। गुरूनानक देव ने मनुष्य को विनम्र एवं शान्तिपूर्ण जीवन जीने का संदेश दिया। मनुष्य के अंदर उपजे हुए अभिमान का निवारण करते हुए गुरूनानक देव सदैव प्रयत्नशीन रहे। उन्होंने तो कहा भी था

नानक नान्हे ही रहो जैसे नान्ही दूब।
और रूख सूख जाएँगें दूब खूब को खूब।

गुरूनानक देव ने स्वयं भी ताउम्र इस दर्शन का पालन किया।

गुरूगोविन्द सिंह जी के बारे में तो यहॉ तक कहा जाता है। कि 22 दिसम्बर 1666 ई0 में जिस स्थान पर इनका जन्म हुआ उसके एक तरफ मंदिर था तो दूसरी तरफ मस्जिद थी। शायद इसी दैवी संयोग का असर रहा कि श्र गुरूगोविन्द सिंह जी ने जीवन का मूलमंत्र देते हुए कहा कि –

''मानस की जात सबै एक पहिचानबो''

इन्होंने राम और रहीम,कृष्ण और करीम के बीच एक ही एक ही अलौकिक प्रकाश की दिव्यानुभूति की।

कर्ता करीम सोई,राजक रहीम ओई।
दूसरो न भेद कोई, भूल भरम मानबो एक ही की सेब
सब ही को गुरूदेव एक, एक ही स्वरूप सबै एक ज्योति जानबो।

सच तो यह है कि अल्लाह एवं राम, कुरान एवं पुराण में कोई भेद नहीं है। श्री गुरूगोविन्द सिंह जी महाराज ने जनता को सही मार्ग दिखाने के लिए धर्म, जाति, देश, भाषा, के कारण उत्पन्न विभिन्नता समाप्त कर भावनात्मक स्थापित करने के उद्देश्य से यह समझाया कि मंदिर–मस्जिद, पूजा–नमाज, देव–गंधर्व, हिन्दू–मुसलमान में मूलतः कोई भेद नहीं है। यह केवल बाहरी दिखावा है, इतना ही नहीं आत्मा भी परमात्मा का ही अंश है।।1।।

यह गुरूगोविन्द सिंह जी की ही परम्परा थी और उनका दृढ़संकल्प था कि उन्होने स्वयमेव ही युग की चुनौतियों को स्वीकार किया और अपने असीम साहस, दृढ़संकल्प व आश्चर्यजनक प्रतिभा से समाज की सड़ाध फैला रही दकियानूसी परम्परा की प्रलयधारा को मोड दिया और संगत (सहचिंतन) और पंगत (सहभोजन, लंगर) की अनुपम रीति को आगे बढ़ाकर जन साधरण को एकता का मंत्र दिया । स्मरण रहे कि बिना किसी भेदभाव के विश्व के सभी गुरूद्वारों में आज भी सभी धमानुयायियों को श्रद्धावनत हो समर्पित भाव से लंगर प्रदान करने की परम्परा आज भी अविरल प्रवाहमान है।

4 पवित्र कुरान के माध्यम से विश्व शान्ति :–

पवित्र कुरान इबादत और ईमान का वह धर्मग्रथ है जिसकी शिक्षाओं पर 610 ई0 में अवतरित इस्लाम धर्म की स्थापना हुई। इस पुस्तक की पतित्र शिक्षाओं में मनुष्य को अल्लाह की एक अमर रचना के रूप में प्रस्तुत कर उसके जीवन को दो कालखंडों में बॉटा गया जिसका बहुत थोडा भाग मृत्यु के पहले और अधिक भाग मृत्यु के बाद रखा गया। मृत्यु से पहले का भाग परीक्षाकाल है। मृत्युपरांत कालखंड वह कालखंड है जिसमें मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार अच्छा या बुरा परिणाम पाता है। अतः इसे परीक्षाफलकाल कहा जाता हैं जो लोग मात्र मीडिया के माध्यम से कुरान को जानते हैं वह सामान्य रूप से समझते हैं कि कुरान एक जेहाद को प्रचारित व प्रसारित करने वाली पुस्तक है जबकि वस्तुस्थिति से उलट है। जो व्यक्ति भी कुरान को प्रत्यक्ष रूप से पढ़े उसे यह जानना कठिन नहीं होगा कि कुरान का हिंसा से कोई एम्बन्ध नहीं। कुरान पूर्णरूप से शान्ति की पुस्तक है हिंसा की पुस्तक नहीं कुरान के अनुवादक मौलाना वहीदुद्दीन खॉन अपने अनूदित पवित्र कुरान के परिचय में वर्णित किया है कि कुरान का वांछित मनुष्य दिव्य मनुष्य है आर्थात वह मनुष्य इस संसार में खुदावाला मनुष्य बने। जो पालनहार की ओर एकाग्र रहकर जीवन व्यतीत करें। पालनहार का पसंदीदा मनुष्य बनने की प्रक्रिया को कुरान में तजिक्यः कहा गया है। तजिक्यः का अर्थ है शुद्धीकरण अर्थात अपने व्यक्तित्व को अवांछित चीजों से बचाना कुरान को मानने वालों के अदंर यह प्रक्रिया उसके जीवन के अंतिम क्षणों तक जारी रहती है। ।।2।।

जन्म के समय मनुष्य बहुत ही पवित्र और पावन प्रकृति का रूप होता है। क्रोध,ईर्ष्या, लालच, भेदभाव, घंमड, अस्वीकारोक्ति, बदले की भावना , उसकी प्रकृति पर पड़ने वाले नकारात्मक दाग है जो मनुष्य की प्रकृति को दूषित करते रहते हैं। ऐसी स्थिति में हन नर–नारी को आत्मनिरीक्षण के माध्यम से अपना शुद्धीकरण करते रहना चाहिए।

इन नकारात्मक दागों से रहित निष्कलंकित मनुष्य ही दिव्य मनुष्य तथा अल्लाह का पसंदीदा इंसान है।

5 जैन धर्म तथा विश्व शान्ति :–

यह ब्राह्मण धर्म के पश्चात आने वाली धार्मिक व्यवस्था है। वैसे इसके संस्थापक के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है। भगवान माहवीर जैन गुरूओं में से अंतिम थे, जिनको तर्थकर के नाम से जाना जाता है। सर्वधर्म समावेशन का जो अद्वितीय उल्लेख जैन धर्म के उद्धरणों में मिलता है वह विश्व धर्म के उदाहरणों में कहीं भी परिलक्षित नहीं होता । सभी धर्म कहीं न कही विश्व के अन्य धर्मों पर अपनी श्रेष्ठता उद्घोष में करते नजर आते हैं। जैन दर्शन के सिद्धान्तों में विहित ''स्याद्वाद'' ने सहिष्णुता वसद्ीाव की एक नई परिभाषा का निष्पादन किया है। जहॉ समावेशन एवं समन्वयन के दृष्टांत को स्थापित करते हुए मौखिक हिंसा से भी दूर रहने हेतु वाणी में विनम्रता तथा दूसरों के विचारों की सहज स्वीकृति की स्वीकारोक्ति की गई है। जैन दर्शन में अहिंसा एवं शान्ति के परम तत्व की सत्ता सर्वोपरि है। शायद इसीलिए कुछ भी कहने से पहले उसके सात विविध पहलुओं पर विचार कर उनसे भी पहले कथन पूर्व स्यात् शब्द का उद्घोष करना अपरिहार्य बताया गया है।

1– स्यात् अस्ति च
2– स्यात नास्ति च
3– स्यात अवक्तव्यं च
4– स्यात अस्ति च नास्ति च
5– स्यात अस्ति च अवक्तव्यं च
6– स्यात नास्ति च अवक्तव्यं च
7– स्यात अस्ति च नास्ति च अवक्तव्यं च

जैन धर्म के मुख्य सिद्धांत हैं–

1– अहिंसा, 2– वेदोंमें अविश्वास, 3– आत्मा का अमरत्व
4– प्रत्येक पदार्थ अर्थात वृक्ष, पौधों और पदार्थ में जीवन है
5– जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य र्निवाण प्राप्ति है

जैन धर्म के दो प्रमुख पंथ है–

1– श्वेताम्बर 2– दिगम्बर

जैन धर्म वाणी के वेचारिक अहंकार जन्य दोषों के दूर करने हेतु इन सात प्रकार की वैचारिक विविधताओं तथा उनमें भी संभावनागत, परिस्थितिजन्य उत्पन्न होने वाले दोषों के विमोचन हेतु स्यात् शब्द को मत्रंवत् उद्धृत किया है।

निष्कर्षत : जैन धर्म भी अन्य धर्मों, विचारों तथा मतों में परस्पर शान्ति स्थापना को सर्वोपरि महत्व देते हुए यह स्वीकार करता है कि कोई भी मत या विचार सर्वोपरि एवं अंतिम मत एवं विचार नहीं है तथा उसमें भी परिष्कार की पूर्णरूपेण सम्भावना से इनकार नहीं किया जा सकता है।

6 बौद्ध दर्शन के माध्यम से विश्व शान्ति :–

बौद्ध धर्म की संस्थापना एक क्षत्रिय राजकुमार सिद्धार्थ के द्वारा हुई थी, जिनका जन्म 567 ई0 पूर्व नेपाल की तराई में लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ था। जैन धर्म की तरह बौद्ध धर्म का भी वेदों में विश्वास नहीं था , किन्तु आत्मा के आवागमन में विश्वास था। अहिंसा इनका मूलभूत आधार था। जीवन में मध्यमार्ग का अनुसरण करना ही इनका सबसे बड़ा उपदेश है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि बुद्ध धर्म का मूल आधार ही दया, करूणा एवं शान्ति में सन्निहित है। बुद्ध बचपन से ही बड़े उद्दात् चरित्र एवं महामना थे। करूणा का तो अथाह सागर ही उनके मन में हिलोरें लेता था। कहा जाता है कि बाल्यकाल में जब उन्होंने देवदत्त द्वारा मारे गए घायल हंस की सेवा– शुश्रूषा की तथा उसे उसको देने से मना कर दिया। मामला न्यायालय तक पहुॅचा तो न्यायालय ने शास्त्र सम्मत मत प्रकट करते हुए कहा कि माने वाले से बचाने वाले का अधिकार सदैव बड़ा होता है। सांसारिक जीवन की अवस्थाओं तथा परिस्थितियों से पीड़ित मानव मात्र की जरा, मृत्यु, रोग, दुख के भॅवर में जूझती पीड़ा ने कोमलमना सिद्धार्थ के अंतःकरण को इस कदर उद्वेलित किया कि राजमहल के अंतःपुर की संपदा, अगाध, वैभव, रसविलास युक्त वातावरण तथा सुंदरियों का आकर्षण भी उनके विचलित मन को शांत न कर सका। जीवन की क्षणभंगुरता ने सिद्धार्थ के मन को वैराग्यपूर्ण कर दिया तथा वो निर्वाण के शाश्वत मार्ग पर पलने के लिए व्याकुल हो उठे। बौद्ध दशके जिन चार आर्य सत्यों का महात्मा बुद्ध ने साक्षात्कार किया वो इस प्रकार थे –

1– दुःख है। (दुखमस्ति)
2– दुख का कारण है। (दुखस्यकारणम्)

3– दुख का निवारण है। (दुखस्यनिवारणमस्ति)
4– दुख के निवारण के मार्ग है। (दुख निरोधगामिनी प्रतिपदा)
बुद्ध का पूरा जीवन साधना इस मानवता को जो कि दुख के भवजल में गिरी हुई थी उससे मुक्ति एवं विश्वशान्ति तथा समरसता की स्थापना का एक विराट प्रयास है। उन्होंने मध्यम मार्ग बताया ओर जीवनचर्या हेतु अष्टांगिक मार्गों का भी उद्घोष किया।
जो इस प्रकार है–
1– सम्यक दृष्टि 2– सम्यक संकल्प
3– सम्यक वाणी 4– सम्यक कर्म
5– सम्यक आजीविका 6– सम्यक उद्योग
7– सम्यक स्मृति 7– सम्यक ध्यान
इन्होंने पंचशील मार्गों की चर्चा की है–
1– पहला शल है– जीव हिंसा से विरत रहना,
2– दूसरा शील है– चोरीसे विरत रहना,
3– तीसरा शील है– व्यभिचार भाषण से विरत रहना,
4– चौथा शील है– असत्य भाषण से विरत रहना,
5– पॉचवॉ शील है– मदिरापान न करना,
गौतम बुद्ध ने त्रिरूपिणी हिंसा का विरोध किया। अहिंसा, दया, करूणा, बुद्ध धर्म के सार तत्व रहे। सम्पूर्ण बौद्ध धर्म का बीज एक राजकुमार के रूप में आरोपित हुआ । राज्य वैभव के परित्याग के रूप में अंकुरित हुआ। सम्पूर्ण मानवता को दुखों से मुक्ति दिलाने की खोज में वनों में पल्लवित हुआ और अंत में मध्यम मार्ग में सन्निहित हुआ।
बौद्ध धर्म के दो प्रमुख पंथ है– महायान, हीनयान।
आज महात्मा बुद्ध हमारे बीच नहींहैं, पर उनकीअमर वाणी व उनके चरणचिह्न आज भी विनाश की विभीषिका से संत्रस्त मानवता का पथ प्रदर्शन कर रहे हैं। महात्मा बुद्ध ने ज्ञान की जो ज्योति प्रज्वलित की थी वह आज भी अज्ञानाधंकार में भटकती मानवता का पथ प्रदर्शन करने की उतनी ही क्षमता बनाए हुए है जितनी कि महात्मा बुद्ध के जीवनकाल में थी।

7 सूफी परम्परा का ज्ञान विश्व शान्ति हेतु एक नया आयाम :–

यूँ तो सूफी मत एक विश्व व्यापी परम्परा है लेकिन भारतवष्र में इस मत का सूत्रपात 12 वीं शताब्दी में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के आविर्भाव काल से माना जाता है। तदुपरान्त 15 वीं शताब्दी तक अनेकाने सूफी सम्प्रदाय स्थापित हुए। सूफी परम्परा के अनुसार इश्क के समान को पवित्र कोई वांछनीय वस्तु संसार में नहीं है। फलतः प्रेम मार्ग में प्रवाहित होते हुए आध्यात्मिक रहस्य की व्यंजना की जा सकती है। इसीलिए सूफी कवियों ने प्रेम को आध्यात्मिक रूप प्रदान किया। सूफी कवियों के अनुसार ईश्वर एक है जिसे '' हक'' कहते है। उसमें और आत्मा में कोई अंतर नहीं है। उनमें अद्वैत भावना है। आत्मा या बन्दा इश्क के सूत्र से हक तक पहुॅचता है। अंतिम दशा मारीफत में पूर्ण सम्मिलन के बाद बंदा फना होकर ''बका'' के लिए प्रस्तुत होता है। निःस्वार्थ, निष्काम प्रेम ही सब कुछ है। ।।2।। सूफी परम्परा में ईश्वर को प्रेमी या प्रेमिका मानकर उसके लिए सम्पूर्ण, समर्पित प्रेम की परिकल्पना की गई है। इनमें संचय को निकृष्ट तथा त्याग को अपरिहार्य बताया गया है। अपना सर्वस्व न्यौछावर कर सम्पूर्ण विश्व को अपना बना लेने की अद्भुत कला शायद सूफी परम्परा ने ही सिखलाई और इस परम्परा ने एक फकीर (जिसके अंदर बिना पश्चाताप के अपना सब कुछ लुटा देने का जुनून हो), एक सम्राट (जिसका संचय करना ही धर्म है तथा संचित राजकोष ही समृद्धि का प्रतीक) से बड़ा बताया है । सूफी संतों ने ठीक ही कहा है– मन लागा यार फकीरी में,
हाथ में कुंडी बगल में सोटा,
चारों दिशा जगीरी में।
अतएव एक सूफी संत की जागीर की सीमाओं का कोई आदि अंत नहीं है। जबकि एक राजा के राज्य की भौगोलिक परिधि निर्धारित है।
निष्कर्षतः यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि सूफी परम्परा के अन्तर्गत निहित क्षमता के माध्यम से विश्व के जनमानस की हिंसा और अन्याय के मार्ग से विरक्त कर प्रेम व शान्ति के पथ पर ला सकते हैं।

8 सनातन धर्म शिक्षण विश्व शान्ति का अग्रदूत :–

किसी पाश्यातय विद्वान ने ठीक ही कहा है कि मानव प्रगति का हर वो अध्याय जिसका अदि चरण पश्चिम से शुरू

होता है उसका अंत पूर्व में होना निर्धारित है। यदि वह एक शान्तिपूर्ण लक्ष्य की ओर अग्रसर है तो शायद यही कारण है कि 20 शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जब अंग्रेजी साहित्यके प्रकाण्ड विद्वान व नोबेल पुरस्कार विजेता टी0 एस0 इलियट ने अपने ख्यातिबद्ध महाकाब्य '' द वेस्टलैण्ड '' का अंत दा–दा–दा अर्थात् दत्ता, दया, दमता, से शुरू कर अंत ओम्, शान्ति, शान्ति, शान्ति से किया ।

विश्व शान्ति हेतु मानस शिक्षण :–

सनातन धर्मपरम्परा यह कहती है कि जब– जब इस धरती परअनाचार, अधर्म, अहिंसा व अन्याय का जन्म हुआ तब–तब धरा को उससे मुक्ति दिलाने हेतु एक दिव्यपुरूष ने अवतार धारण करना स्वीकार किया ।

जब–जब होहिं धर्म कै हानी। बाढ़ें असुर अधम अभिमानी।।
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी। सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी।।
तब–तब प्रभु धरि विविध शरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ।।4।।

तुसीदास जीने इस बहुचर्चित महाकावय के माध्यम से शान्ति का ज्ञान दिया है जो कि न केवल शान्ति अपितु बहुतायत सद्गुणों के शिक्षण की सामग्री अपने अंतर में समाहित किए हुए है। विपरीत परिस्थितियों से उद्वेलित मन को शांत एवं स्थिर बनाए रखने हेतु एक जगह भगवान राम ने विभीषण को जीवन के झंझावातों से मुक्ति पाने का मार्ग बताते हुए कहा है कि अगर एक इंसार सद्गुणों के रथ पर विराजमान हो, कटिबद्धता के साथ सतकर्म के मार्ग पर समर्पित हो आगे बढ़े तो उसे पराजित करने तथा चुनौती देने वाले शत्रु का जन्म ही नहीं हो सकता। प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से गोस्वामी जी ने इसी बात का वर्णन करते हुए कहा है–

सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य,सील दृढ ध्वजा पताका।।
बल विवेक दम परहित घोरे। क्षमा कृपा, समता रज जोरे।।
ईश भजनसारथी सुजाना। विरति चर्म संतोष कृपाना।।
दान परसु बुद्धि शक्ति प्रचंडा। वर बिग्यान कठिन कोदंडा।।
अचल अमल मन त्रोन समाना। सम,जम,नियम सिलीमुख नाना।।
कवच अभेद विप्र गुरू पूजा। एहि सम विजय उपय न दूजा।।5।।

श्री राम चरित मानस एक सरल तथा गेय पदों को समाहित करता हुआ छंदबद्ध महाकाव्य है जिसके शिक्षण से हम युवाओं, में मित्रता, धर्मपरायणता, सहजता, शान्ति, सहयोग, समर्पण जैसे चारित्रिक गुणों का समावेश करने के साथ–साथ उनके अंदर साहित्यिक विरासत की समझ भी विकसित कर सकते हैं।

9 विश्वशान्ति की विराट भावना हेतु श्रीमद्भगवद्गीता का शिक्षण :–

मनुष्य को मनोयोग के माध्यम से मुक्तिमार्ग पर पहुॅचाने वाली गीता एक आर्षकाव्य व स्वयमेंव एक स्वयम्भू देववाणी है। गीता योग की तीन अमर विधाओं यथा ज्ञान, कर्म तथा भक्ति को अपने अंदर समाहित किए हुए सम्पूर्ण मानव जाति को एक त्रिगुणी सृष्टि के रूप में देखती है जिसमें सतत्व,रजस वतमस का विविध अनुपातों में पंच महाभूतों (क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर) के साथ समावेषण है। ईश प्राप्ति हेतु ज्ञान योग, भक्ति योग तथा कर्मयोग तीन साधन बताए गए है, जिनमें कर्मयोग को अपनाकर मनुष्य अपने मुक्ति मार्ग की सहज ही प्राप्ति कर सकता है। गीता जब निष्काम कर्म की बात करती है तो इसमे लक्ष्य एवं माध्यम (कर्मपथ) की शुचिता तथा सार्वभौमिकता पर विशेष बल देती है। अगर हम कर्मपथ निर्धारण को ध्यान में रखकर जीवन यापन करें तो शायद विरोधभास उत्पनन होने की सम्भावना नगण्य हो एवं विश्वशान्ति की स्थापना का मार्गसहज एवं सुलभ हो और स्वार्थ के टकराव को भी मिटाया जा सके।

10 निष्कर्ष :–

धर्म शिक्षण के पूर्ण में ही हमें शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों को यह बताना आवश्यक है कि धर्म एक सहज जीवन यापन करने की विधि मात्र है। सभी धर्म टकराव की संभावनाओं एंव परिस्थितियों को निष्क्रिय करने हेतु तत्पर होते तथा एक उग्र, धर्मान्ध एवं धर्मोन्मादी आस्तिक व्यक्ति से एक शान्तिप्रिय नास्तिक व्यक्ति कहीं अधिक श्रेष्ठ है क्योकि वह विश्व शान्ति के लिए कोई खतारा नहीं उत्पन्न कर सकता तथा वह अपनी जीवन शैली एव पद्धती को लेकर किसी के प्रति आक्रामक भी नहीं हैं। वह किसी पर अपनी विचार धारा को थोपता भी नहीं है। अतः वह किसी के जीवन पद्धति में अगर साधक नही ंतो बाधक भी नही हैं। यहॉ हमें सनातन धर्म की इस सीख को स्वीकार करना ही पड़ेगा।

अयं निज परोवेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां ते वसुधैवं कुटुम्बकम्।।6।।

हर वैदिक कर्म एवं ऋचा का अतं तथा मानव जीवन से जुड़े सनातन धर्म वर्णित कर्मकाण्ड का अन्त शान्ति की कामना से होता है–

ऊँ द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्बह्म शान्तिः सर्व शान्ति :।
शान्तिरेव शान्ति : सा मा शान्तिरेधि।
ओउम् शान्तिः शान्तिः शान्ति ।।7।।

सन्दर्भ सूची :–

1– उपाध्याय, लालमोहर, गुरूगोविन्द सिंह का मानवतावाद, पंजाब केसरी, हिसार रविवार, 2012 14 पृष्ठ 6
2– खॉमौलाना वहीद्दुदीन, पवित्र कुरान,(अनूदित) परिचय, गुड़वर्ड बुक पब्लिकेशन, 2014 पृष्ठ 14
3– वार्ष्णेय लक्ष्मी सागर, हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1984।
4– गोस्वामी तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, मूल गुटका, गीताप्रेस गोरखपुर, 122 वॉ संस्करण लंकाकाण्ड, पृष्ठ 547
5– गोस्वामी तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, मूल गुटका, गीताप्रेस गोरखपुर, 122 वॉ संस्करण लंकाकाण्ड, पृष्ठ 104।
6– हितोपदेश,1–2–71,12 वी शताब्दी।
7– धर्मशिक्षा, डी0 ए0 वी0 कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति।